**भगत नामदेव – सबद ३३**

**बानारसी तपु करै उलटि तीरथ मरै अगनि दहै काइआ कलपु कीजै ॥**

**रागु रामकली, भगत नामदेव, गुरु ग्रंथ साहिब, ९७३**

बानारसी तपु करै उलटि तीरथ मरै अगनि दहै काइआ कलपु कीजै ॥
असुमेध जगु कीजै सोना गरभ दानु दीजै राम नाम सरि तऊ न पूजै ॥१॥
छोडि छोडि रे पाखंडी मन कपटु न कीजै ॥
हरि का नामु नित नितहि लीजै ॥१॥ रहाउ ॥
गंगा जउ गोदावरि जाईऐ कुँभि जउ केदार न्हाईऐ गोमती सहस गऊ दानु कीजै ॥
कोटि जउ तीरथ करै तनु जउ हिवाले गारै राम नाम सरि तऊ न पूजै ॥२॥
असु दान गज दान सिहजा नारी भूमि दान ऐसो दानु नित नितहि कीजै ॥
आतम जउ निरमाइलु कीजै आप बराबरि कंचनु दीजै राम नाम सरि तऊ न पूजै ॥३॥
मनहि न कीजै रोसु जमहि न दीजै दोसु निरमल निरबाण पदु चीन्हि लीजै ॥
जसरथ राइ नंदु राजा मेरा राम चंदु प्रणवै नामा ततु रसु अंमृतु पीजै ॥४॥४॥

**सार:** वास्तविक होने का अर्थ है स्वयं का सामना करने की हिम्मत रखना, बिना किसी दिखावे, भ्रम या उधार ली पहचानों के। यह हमें ईमानदारी से उन इरादों को समझने के लिए प्रेरित करता है जो हमारे विचारों, शब्दों और कर्मों को आकार देते हैं। साथ ही, यह आभास भी कराता है कि बदलाव इस बात से शुरू नहीं होता कि हम दूसरों को कैसे दिखते हैं बल्कि इस बात को समझने से शुरू होता है कि असल में हमारे भीतर क्या हमें प्रेरित करता है। इस दृष्टि से देखें तो बाहरी तौर-तरीक़े, दान-पुण्य और अच्छाई का दिखावा तब अपना महत्व खो देते हैं जब वह सच्चाई के बजाय अहं, पहचान पाने की चाहत या अपने स्वार्थ से प्रेरित हों। आंतरिक ईमानदारी अलग होने के भ्रम को मिटा देती है और इस सत्य को सामने लाती है कि सभी जीवों में एक ही तत्व मौजूद है। एकता के इस अहसास से करुणा, विनम्रता और सेवा की भावना स्वाभाविक रूप से पैदा होती है, यह सभी उस जीवन की अभिव्यक्ति हैं जो पूरी सृष्टि के साथ एकता के भाव से जुड़ा है।

बानारसी तपु करै उलटि तीरथ मरै अगनि दहै काइआ कलपु कीजै ॥
काशी में तप करना, पवित्र तीर्थस्थल पर उल्टे लटककर प्राण त्यागना, या कायाकल्प के लिए शरीर को जलाना प्रभावशाली लग सकता है। शरीर को कष्ट देने वाली यह क्रियाएँ असल में अहं का ज्ञानोदय का बल-प्रयास हैं जो सार्थक आध्यात्मिक प्रगति के बजाय बाहरी दिखावे से आत्म-साक्षात्कार पाने की कोशिश दर्शाता है।

असुमेध जगु कीजै सोना गरभ दानु दीजै राम नाम सरि तऊ न पूजै ॥१॥
अश्वमेध यज्ञ किया जाए या अपने वज़न के बराबर सोने का दान दिया जाए, फिर भी इससे सर्वव्यापक चेतना के वास्तविक स्वरूप का सम्मान करने या उसके सत्य को समझने के बराबर यह नहीं हैं। यह बताता है कि अस्तित्व के मूल तत्व का अनुभव बड़े-बड़े कर्मकांडों या भौतिक धन-संपत्ति से नहीं किया जा सकता। (१)

छोडि छोडि रे पाखंडी मन कपटु न कीजै ॥
पाखंड को छोड़ दो और मन में छल-कपट मत आने दो। सच्चाई अपनाने का यह आह्वान हमें अपनी नीयत की सच्चाई का सामना करने और उसे समझने के लिए प्रेरित करता है।

हरि का नामु नित नितहि लीजै ॥१॥ रहाउ ॥
हर पल उस सर्वव्यापी सत्ता का ध्यान करो और उसे निरंतर अपने भीतर आत्मसात करो। यह एकत्व पर निरंतर मनन करने का उपदेश है, जब तक कि वही मन की स्वाभाविक प्रवृत्ति न बन जाए। (१)(विराम)

गंगा जउ गोदावरि जाईऐ कुँभि जउ केदार न्हाईऐ गोमती सहस गऊ दानु कीजै ॥
कोई गंगा और गोदावरी की यात्रा करे, कुंभ या केदारनाथ में स्नान करे अथवा गोमती तट पर हज़ार गायों का दान भी कर सकता है। यह उस ग़लत धारणा को दर्शाता है कि कुछ पवित्र स्थलों की यात्रा करना, अनुष्ठान करना और दान करना आंतरिक शुद्धता की ओर ले जा सकता है।

कोटि जउ तीरथ करै तनु जउ हिवाले गारै राम नाम सरि तऊ न पूजै ॥२॥
लाखों तीर्थयात्राएँ की जा सकती हैं या शरीर को हिमालय में जमाया जा सकता है, फिर भी इनमें से कोई भी सर्वव्यापी ऊर्जा की वास्तविकता का सम्मान या प्रतिबिंब नहीं है। यह स्वयं द्वारा किए गए कष्टों की निष्फलता को दर्शाता है क्योंकि उससे ज्ञान की प्राप्ति नहीं होती। (२)

असु दान गज दान सिहजा नारी भूमि दान ऐसो दानु नित नितहि कीजै ॥
घोड़े का दान, हाथी का दान, कलात्मक रूप से निर्मित पलंगों का दान और भूमि का दान निरंतर किया जा सकता है। यह दर्शाता है कि कैसे एक अज्ञानी मन अकसर संपत्ति, प्रतिष्ठा और उदारता के माध्यम से पवित्रता खरीदने का प्रयास करता है।

आतम जउ निरमाइलु कीजै आप बराबरि कंचनु दीजै राम नाम सरि तऊ न पूजै ॥३॥
यहां तक कि यदि कोई व्यक्ति स्वयं को शुद्ध कर ले और अपने मूल्य के अनुरूप सारा भौतिक धन दान कर दे, तब भी यह कर्म सर्वव्यापी ऊर्जा के सार का सही मायने में सम्मान या प्रतिबिंब नहीं कर सकते। इससे स्पष्ट होता है कि भौतिक या सांसारिक दान के उच्चतम रूप भी अंततः सत्य के अनुभव का विकल्प नहीं बन सकते हैं। (३)

मनहि न कीजै रोसु जमहि न दीजै दोसु निरमल निरबाण पदु चीन्हि लीजै ॥
मन में क्रोध न रखें, अपने जन्म को दोष न दें, आंतरिक शांति की पवित्रता और गरिमा को समझें और पहचानें। यह ऐसा पथ बताता है जिसमें दूसरों को दोष देने के बजाय, अपनी स्थिति को स्वीकार करना, उसकी ज़िम्मेदारी लेना और शांति पाना शामिल है।

जसरथ राइ नंदु राजा मेरा राम चंदु प्रणवै नामा ततु रसु अंमृतु पीजै ॥४॥४॥
दशरथ और नंद तो राजा हैं लेकिन मेरे लिए, सर्वव्यापी स्रोत ही सच्चा शासक है। नामदेव विनम्रता से कहते हैं कि वह इसी पवित्र तत्व का स्वरूप हैं। यह किसी पौराणिक निष्ठा के बजाय आंतरिक अनुभव को दर्शाता है जो स्वयं अपनी जाग्रत चेतना के शुद्ध सार के स्वाद का आनंद लेती है। (४)(४)

**तत्त्व:** भक्त नामदेव 'निर्मल निरबान पद' की चर्चा करते हैं जो पवित्रता और मुक्ति की अवस्था है। इस अवस्था में मन अहं, मोह, डर और निजी फ़ायदे की चाह से मुक्त होता है। यह जीवन से भागने का माध्यम नहीं बल्कि जीवन के भीतर ही मुक्ति का अनुभव करने का तरीक़ा है। इस अवस्था में काम मजबूरी या धोखे से नहीं बल्कि स्पष्ट सोच से किए जाते हैं। व्यक्ति बाहरी उपलब्धियों, रीति-रिवाजों या पहचान से संतुष्टि नहीं खोजता बल्कि जीवन में व्याप्त एकता में ही आंतरिक पूर्णता पाता है।

---

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**

**Oneness In Diversity Research Foundation**

**वेबसाइट:** OnenessInDiversity.com

**ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com**